कौटिल्य एकेडमी

www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II

साहित्य नोबेल पुरस्कार 2023

जन्म - 1959, - नॉर्वे

Current AFFAIRS

इस बार साहित्य का नोबेल पुरस्कार नॉर्वेजियन लेखकर जॉन फॉसे को दिया गया है।

फोसे को उनके इनोवेटिव प्ले (नाटकों)और कहानियों के लिए दिया गया।

जॉन फोसे के नाटकों और कहानियों ने उन लोगों को आवाज दी है जो अपनी बातें कहने में सक्षम नहीं थे।

जॉन फोसे ने अपने नाटकों में ड्रामा के जरिए उन इंसानी भावनाओं को जाहिर किया है, जो आमतौर पर जाहिर नहीं की जा सकती हैं। इसे समाज में टैबू (बैन) समझा जाता है।

उनके द्वारा लिखित नाटकों में प्रमुख हैं- समवन इज गोइंग टू कम होम, दि नेम, दि चाइल्ड, मदर एंड चाइल्ड प्रमुख हैं।

उनका पहला उपन्यास, राउड्ट, स्वार्ट (रेड, ब्लैक) 1983 में प्रकाशित हुआ था

साल 2022 में यह पुरस्कार फ्रांसीसी लेखिका एनी एर्नॉक्स को दिया गया था। एनी ने अपनी लेखनी के जरिए साहसिक क्लिनिकल एक्यूटी (clinical acuity) पर कई लेख लिखे हैं।

कौटिल्य एकेडमी
www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II

प्रोफेसर डॉ. जोयीता गुप्ता

Current AFFAIRS

भारतीय मूल की **प्रोफेसर डॉक्टर जोयीता गुप्ता** को **विज्ञान के क्षेत्र** में नीदरलैंड्स के सर्वोच्च सम्मान, **स्पिनोजा पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है।

उन्हें यह पुरस्कार **जलवायु परिवर्तन** के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया गया है।

नीदरलैंड्स के **शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति मंत्री** रॉबर्ट डिज्ग्राफ ने हाल ही में हेग में एक समारोह में यह पुरस्कार प्रदान किया।

डच रिसर्च काउंसिल (एनडब्ल्यूओ) के इस पुरस्कार के रुप में उन्हें 1.5 मिलियन यूरो सम्मान राशि दी गई।

कौटिल्य एकेडमी
www.kautilyaacademy.com IAS·IPS·MPPSC·CJ-II

भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (IBBI)

Current AFFAIRS

दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC) के तहत भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड (IBBI) के गठन के सात वर्ष पूरे हुए।

IBBI एक सांविधिक निकाय है।

इसे दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता, 2016 (IBC) के तहत 2016 में स्थापित किया गया था।

यह दिवाला (Insolvency) पेशेवरों, दिवाला पेशेवर एजेंसियों व संस्थाओं और सूचना उपयोगिताओं पर विनियामक निगरानी रखता है।

IBBI का संचालन केंद्र सरकार द्वारा गठित एक शासी बोर्ड करता है।

IBC कॉरपोरेट कर्जदारों के दिवाला संबंधी मुद्दे का समाधान करने के लिए एक समयबद्ध (330 दिन) प्रक्रिया प्रदान करती है।

यह संहिता कंपनियों, सीमित देयता भागीदारियों, साझेदारी फर्मों और व्यक्तियों पर लागू होती है।

IBC की शुरुआत से लेकर अब तक इसके जरिए करीब 3 लाख करोड़ रुपये की वसूली की जा चुकी है।

इस वित्तीय वर्ष में कॉरपोरेट दिवाला मामलों के समाधान लगभग दोगुने होकर 300 होने की उम्मीद है।